International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 29-07-2024, Accepted: 28-08-2024, Published: 12-09-2024
Volume 6, Issue 2, 2024, Page No. 5-7

शंकर शेष कृत 'बिन बाती के दीप' नाटक में अभिव्यक्त स्त्री–पुरुष सम्बन्ध

डॉ० दर्शन पाण्डेय[1], अनुराधा[2]

[1] प्रोफेसर, हिंदी विभाग, शिवाजी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

[2] शोधार्थी, हिंदी विभाग, मेवाड़ विश्वविद्यालय, चितौड़गढ़, राजस्थान, भारत

सारांश

"बिन बाती के दीप" नाटक शंकर शेष जी द्वारा (1968) रचित एक अनुपम कृति है। बीसवीं सदी के साठोत्तरी नाटककारों में डा० शंकर शेष का हिन्दी नाट्य जगत में एक विशिष्ट स्थान माना जाता है। इनके नाटकों में समसामयिक एवं युगीन संदर्भों का सार्थक चित्रण हुआ है। शेष जी के नाटक कथ्य और रंगमंचीय शिल्प दोनों ही दृष्टियों से सफल रहे हैं। इनके नाटक ह्रदय एवं बुद्धि से जुड़ी जटिलताओं, सामाजिक विसंगतियों के उद्घाटन से संबंधित हैं। जो समसामयिक संदर्भों, विवादों तथा जीवन की व्याख्या करने में भी सक्षम हैं। वैसे तो शंकर शेष ने अपने जीवन काल में कविता, कहानी एवं उपन्यास भी लिखे, परंतु नाटककार के रूप में वे ज़्यादा सफ़ल हुए। शंकर जी ने अपने नाटकों में समाज के प्रति अपनी ज़िम्मेदारी को पूरा किया। उनका लेखन दर्शकों को सामाजिक प्रतिबद्धताओं से तो जोड़ता ही है, उनमें बेचौनी और त्रासद के बीच लाकर सोचने, चिंतन करने को भी विवश करता है। शंकर जी के नाटकों की सबसे महत्वपूर्ण बात है कि इनके नाटकों के पात्र हर तरह की स्थिति में संघर्षरत रहते हैं कभी भी पलायन की बात नहीं सोचते। 'बिन बाती के दीप' नाट्य रचना में शंकर जी ने पति–पत्नी के संबंधों को प्रस्तुत किया है। इस नाटक में शिवराज अपनी अंधी पत्नी विशाखा के चारों और झूठ का ऐसा संसार रच देता है कि वह चाह कर भी अपने पति पर आशंका नहीं कर पाती और सब कुछ जानने के उपरांत उसे माफ़ कर देती है।

मूल शब्दः स्त्री–पुरुष सम्बन्ध, शंकर शेष, 'बिन बाती के दीप'

स्वार्थ व महत्वकांक्षा की भावना

'बिन बाती के दीप' एक ऐसा सफ़ल नाटक माना जाता है, जिसमें पारिवारिक समस्याओं का बखूबी चित्रण किया गया है। यथार्थ का अंकन मुख्यतः है, किन्तु जीवन की समस्याओं का आशावादी अंत एवं समाधान नाटक के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। इस नाटक में शेष जी ने दिखाया है कि आज का मनुष्य कितना महत्वाकांक्षी है और अपने स्वार्थ की पूर्ति हेतु वह किसी भी हद तक गिरने के लिए तैयार है। इस नाटक में शंकर शेष ने मूल रूप से स्त्री–पुरुष संबंधों को दिखाया है। स्त्री–पुरुष का दाम्पत्य संबंध आपसी प्रेम, समर्पण और विश्वास की भावना पर टिका होता है। परंतु इस नाटक में दिखाया है कि आज के आधुनिक युग में मनुष्य इतना महत्वाकांक्षी हो गया कि वह अपने स्वार्थ हेतु इस पवित्र रिश्ते की मर्यादा का भी उलंघन करता है और अपनी अंधी पत्नी को धोखा देने से भी गुरेज नहीं करता। पति और पत्नी का रिश्ता समाज का सबसे सुंदर रिश्ता माना जाता है, किन्तु आपसी विश्वास और समझ के बिना जीवन को नारकीय बना देता है। नाटक में शिव और विशाखा दो मुख्य पात्र हैं। विशाखा अंधी है और उसका पति शिव उसके इसी अंधेपन का फायदा उठाता है उसके लिखे उपन्यासों को अपने नाम से छपवाकर साहित्य जगत का जाना माना चेहरा बन जाता है, जबकि विशाखा इन सबसे अंजान रहती है।

शिव अपनी महत्वाकांक्षा में इतना अंधा है कि वह अपनी अंधी पत्नी को धोखा देने से भी नहीं हिचकिचाता और उसके अंधेपन का फ़ायदा उठाता है। उसके द्वारा लिखवाए उपन्यासों को अपने नाम से छपवाता है। वहीं एक दूसरी औरत जो कि उसकी निजी सहायक है उसके साथ उसके नाजायज़ संबंध हैं। नाटक में एक स्थान पर शिव का कहना है–

"किया ही क्या जा सकता है। मैं तो अजीब सी स्थिति में फँस गया हूँ। मेरे लिए उसका जिंदा रहना भी जरूरी है और उसका ना रहना भी। मंजु उसका रहना इसलिए जरूरी है कि यदि वह नहीं रहेगी तो लेखक के रूप में मेरा अस्तित्व समाप्त हो जाएगा। उसका न रहना इसलिए जरूरी है कि जब तक वह है, तुम मेरे जीवन में पूरी तरह से नहीं आ सकती। मेरी तो कुछ समझ में नहीं आता।" [1]

इन संवादों में नाटककार ने शिव के अन्तर्मन की कुटिलतापूर्ण छटपटाहट को उद्घाटित किया है। जीवन का एक कटु सत्य कि किस प्रकार पुरुष अपनी महत्वाकांक्षा को पूरा करने हेतु अपनी ही अंधी पत्नी के अंधेपन का फायदा उठाता है। वह उसे मारना भी चाहता है परंतु उसे यह भी पता है कि उसके बिना उसका खुद का अस्तित्व भी समाप्त जाएगा, अतः अपनी स्वार्थ पूर्ति के लिए चाहता है कि वह जीवित रहे। वहीं दूसरी तरफ एक पात्र आनंद है, वह भी इस पुरुष प्रधान समाज का एक हिस्सा है परंतु उसका चरित्र शिव की तुलना में कहीं अधिक आदर्शवादी है। वह एक शोषित हो रही नारी विशाखा को उसकी आँखों की रोशनी वापस पाने में सहायता करता है, साथ ही उसके पति का घृणित चेहरा भी उजागर करता है। वह शिव के विश्वासघात का पर्दाफ़ाश करता है। नारी तो हमेशा से ही घर–परिवार के प्रति समर्पित रही है वह अपने पति पर अंधा विश्वास करती है। इन संवादों में आनंद विशाखा से कहता है –

"नहीं विशाखा तुम्हें, धोखा दिया जा रहा है। वैसे मैं कुछ कहना नहीं चाहता। डर लगता है तुम कहीं टूट न जाओ, तुम्हें कुछ हो ना जाए, विशाखा। बात बार–बार उबलकर मेरे होठों तक आती है, पर मैं कह नहीं सकता। मैं तुम्हें इंग्लैंड तो नहीं ले जा सकता, पर शिमला तक तो ले ही जा सकता हूँ। विशाखा मेरा इतना कहना मान लो। " [2] यहाँ यह पता चलता है कि आनंद विशाखा को अंधेपन की दुनिया से बाहर लाकर उसको उसका असली अस्तित्व प्रदान करना चाहता है। जिस यश व कीर्ति की वह हकदार है, उसे वह वापिस दिलाना चाहता है।

स्त्री–पुरुष सम्बंध

शिव की यह क्रूर महत्वाकांक्षा ही तो है जो वह अपनी पत्नी के अंधेपन का फायदा उठाता है। वीणा मलिक के शब्दों में, 'बिन बाती के दीप' में शंकर शेष ने क्षण की इन्हीं दुर्बलताओं को उकेरा है। नाटक का नायक शिवराज अखिल भारतीय स्तर पर प्रसिद्धि पाने हेतु अंधी विशाखा से विवाह कर विश्वासघात करता है। 'क्षण' को जीतने में असमर्थ और दूसरे अंधी लड़की का 'इस्तेमाल' दोनों ही स्थितियाँ उसकी अंधी महत्वाकांक्षा की उन्मत्ता प्रदर्शित करती हैं। 'क्षण के मोह' और 'अंधे मानव के इस्तेमाल' की पहली कड़ी 'बिन बाती के दीप' थी, जिन मुख बिन्दुओं का निरंतर विकास दृ विस्तार शेष के आगे के नाटकों में देखने को मिलता है। [3] वहीं दूसरी तरफ कहीं न कहीं शिवराज का अन्तर्मन उसे कचोटता तो है कि वह गलत कर रहा है, किसी के अंधेपन का फायदा उठा रहा है। परंतु विशाखा उसके लिए सोने के अंडे देने वाली मुर्गी है, क्योंकि उसके द्वारा लिखवाए नाटकों से ही तो उसको प्रसिद्धि प्राप्त हुई है। आज वह अखिल भारतीय मंच पर जाना माना चेहरा है। अगर विशाखा की आँखों की रोशनी वापस आ जाती है तो वह अपनी स्वार्थ पूर्ति नहीं कर सकता। डॉ० नीलिमा 'बिन बाती के दीप' नाटक के संवादों के बारे में लिखती है– "नाटक में छोटे–छोटे तीखे और मंचीय अनुकूलता लिए हुए संवादों की बहुलता है, लेकिन उससे संलग्न दृश्यों में बड़े बड़े एकरस संवादों की संख्या भी कम नहीं है जो आगे पीछे दृश्यगत प्रभाव को कम कर देते हैं।" [4]

भाषायी कौशल

शंकर शेष जी की सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि वह एक ऐसे नाटककार हैं, जो भाषा के गहन ज्ञाता हैं।नाटक में कई जगहों पर हिंदी के साथ अंग्रेजी का ऐसा समन्वय प्रदान किया है कि उनकी भाषा पर पकड़ देखते ही बनती है। इस नाटक में त्रासदी है, क्रूरता है, समकालीन समाज की समस्त विसंगतियाँ हैं। कभी–कभी नाटक में विशाखा की स्थिति देखकर मन बेचौन होने लगता है, परंतु शेष जी ने कहीं भी नाटक को बोझल नहीं होने दिया। प्रस्तुत नाटक में भाषा सरल, सहज, सुबोध व पात्रानुकूल है। नाटक में कहीं–कहीं हास्य व्यंग भी मिलता है। नाटक में अंग्रेजी, उर्दू, फ़ारसी भाषा का भी प्रयोग हुआ है। नाटक के एक पात्र नटवर के द्वारा नाटककार ने कुछ ऐसे ही दृश्य उतारे हैं। उसके संवादों में अँग्रेजी का जिस तरह से प्रयोग हुआ है उसमें दर्शक नटवर की अंग्रेजी पर हँसने को मजबूर हो जाता है। जिससे पता चलता है कि शंकर शेष जी कलम के कितने धनी थे। ऐसे संवादों से नाटक की बोझिलता भी कम होती है। नाटक की बोझिलता को दूर करने के लिए शंकर शेष ने नटवर के संवादों द्वारा दर्शकों को हँसने पर मजबूर किया है। इस प्रकार जब भी कहीं नाटक बोझिल होने लगता है वहाँ नटवर के वार्तालाप एवं अटपटी अंग्रेजी उस बोझिलता को कम कर देती है। यही तो शंकर शेष जी के नाटकों की सफलता का मुख्य कारण है। वे दर्शकों को यह बताना भी चाह रहे हैं कि अगर हम सोचते हैं कि समाज नासमझ है और हम कुछ भी गलत करते रहें तो यह हमारी भूल है। नटवर कहता है– "ज़िंदगी एक तिलिस्म है .... लाइफ़ इज तिलिस्म। बिल्ली आँखें मूँद कर दूध पीती है, सोचती है कोई उसे देख नहीं रहा है। शी कालोजेज़ हर आइज। शुतुरमुर्ग रेत में गर्दन गाड़कर सोचता है कि उसे कोई नहीं देख रहा। पर हर कब्र से मुर्दा उठता है। फ्राम एवरी ग्रेव ए डेड मैन राइजेज़।" [5] इन संवादों द्वारा नटवर ने शिव पर कटाक्ष किया है क्योंकि नटवर को भी शिव तथा मंजु के संबंधों की जानकारी है। परंतु शिव को लगता है कि उसके इन नाजायज संबंधों के बारे में कोई नहीं जानता। कहीं ना कहीं नटवर इन संवादों द्वारा शिव को इशारा करना चाहता है पर शिव अंजान बनने का नाटक करता है उसे लगता है कि वह जो कर रहा है उसके बारे में लोग नहीं जानते तो यह उसकी भूल है। आज के परिवेश में यह समस्या आम हो गयी है पुरुष तो क्या स्त्रियाँ भी अपनी परंपरा से हटकर विसंगतियों में पड़ती जा रही है। वह भी ऐशो–आराम भरा जीवन जीना चाहती हैं। झूठी व आधुनिक सभ्यता की चकाचौंध और भौतिकता एवं समृद्धि के पीछे छिपी क्रूरता को देखना ही नहीं चाहतीं और निरंतर चारित्रिक पतन की ओर चलती चली जा रहीं हैं।

वहीं आनंद से बात करते–करते शिवराज महसूस करता है कि वह धोखा कर रहा है। किसी के अंधेपन का का फायदा उठा रहा है। परंतु अपने स्वार्थ की पूर्ति हेतु वह धोखे को धोखा नहीं समझता है और कहता है– "आनंद यह धोखा तो है पर यह धोखा विश्वास को जिंदा रखने के लिए आवश्यक है। उसे इस भ्रम की आदत पड़ गई है। उसे लगता है वह सार्थक जीवन जी रही है। उसे लग रहा है उसकी व्यथा सहस्त्रों पाठकों तक पहुँच रही है, इसलिए वह हँसती है, मुस्कराती है। सार्थक जीवन जीने का आत्मविश्वास बहुत बड़ी चीज होती है। वह सोचती है उपन्यासकर के रूप में जो यश मिला है,वह उसके अंधेपन का मुयवजा है।" [6] यहाँ शिव अपने आपको निर्दोष साबित करना चाहता है क्योंकि उसके अनुसार विशाखा अपने आपको उपन्यासकर समझती है और यही धोखा उसे जीने की ऊर्जा प्रदान करता है नहीं तो उसे उसका अंधापन खलता है। इसी का फायदा शिव उठाना चाहता है। शिवराज को यथार्थ का बोध तो है पर उसकी महत्वाकांक्षा उसे यह अनैतिक और क्रूरता भरा व्यवहार करने के लिए मजबूर करती है। तभी तो वह इतना गिर जाता है कि मंजु के साथ मिलकर वह विशाखा को मारने की साजिश भी रच बैठता है। विशाखा शिवराज के इस घिनोने रूप से कोसों दूर है उसे पता भी नहीं कि उसका पति जिस पर वह अंधा विशवास करती है, उसने उसके चारों ओर धोखे का जाल बुन रखा है। जो वह सोचती–समझती है सब छलावा है, वह शिव की प्रशंसा करते हुए उससे कहती है– "(भावुकता से) शिव, तुमने मुझे जीवित रखा, मेरी आत्मा को जीवित रखा। मेरी वेदना को तुमने हजारों लोगों तक पहुंचाया। तुम मेरे स्वामी, सखा, सभी बने। तुमने अपने कवि को समर्पित किया। तुमने अपने कंठ को अवरुद्ध किया। तुम मुझ अंधी की लाठी बने । तुमने मेरी कीर्ति देश के हर छोर तक पहुँचाई। पर मैं अभागिन,तुम्हारे लिए कुछ न कर सकी। तुम्हें एक चाय भी बनाकर पिला न सकी। तुम्हारे कोट में एक बटन तक नहीं टांग सकी। तुम्हारा सूनापन (विराम) ....तुम्हारे आँगन का सूनापन भी दूर नहीं कर सकती ....।" [7] यहाँ विशाखा अपने आपको लाचार और हीन समझती है और अपने अंधेपन के कारण अपने पति के लिए कुछ न कर पाने के कारणवश हताश होती है। यही तो स्त्री ह्रदय की कोमलता है, उसका स्वभाव है कि वह हमेशा अपने घर एवं परिवार के लिए समर्पित रहती है। यह भारतीय परंपरा है। परंतु यह विशाखा की त्रासदी है कि जिस पति के लिए कुछ न कर पाने के कारण हतोत्साहित और आत्मग्लानि में है, वही पति उसे धोखा दे रहा है, उसका इस्तेमाल कर रहा है।

वहीं मंजु नामक पात्र द्वारा नारी का बेहद नकारात्मक रूप दिखलाया गया है जो अपने फ़ायदे के लिए एक अंधी औरत को धोखा देती है और उसके पति के साथ मिलकर उसे मारने तक से भी गुरेज नहीं करती। परंतु अंत में वह लाचार सी प्रतीत होती है, क्योंकि वह शिव के एहसान के तले दबे होने के कारण गलत कृत्य करने को मजबूर होती है। नाटक में कई बार वह शिव को कहती है कि यह सब गलत है और एक औरत होने के नाते वह विशाखा को धोखा नहीं देना चाहती, वह शिवराज से कहती है– "नहीं, शिव, यह षडयंत्र अधिक दिनों तक नहीं चल सकता। इसकी समाप्ति होनी ही चाहिए।" [8]

पारंपरिक भारतीय नारी

विशाखा एक पारंपरिक भारतीय नारी को प्रभावशाली रूप से चित्रित करती है। नारी का वह रूप जो हमेशा से पूजनीय माना गया है, जो हमेशा से ही क्षमाशील है, जिसका ऋषि–मुनि भी सत्कार करते हैं, वह हमें इस नाटक में विशाखा के रूप में देखने को मिलता है। पत्नी के अंधेपन का फायदा उठाकर शिवराज अपनी महत्वकांक्षा पूरी करता है। वह एक औसत दर्ज़े का लेखक है और अपनी पत्नी द्वारा लिखित रचनायों को अपने नाम से प्रकाशित करवाता है और पूरा श्रेय खुद को देता है। इस प्रकार साहित्य जगत में प्रतिष्ठित हो जाता है। शिवराज के मित्र द्वारा सच्चाई बताने पर विशाखा दुखी आवश्य होती है परन्तु भारतीय नारी के आदर्श को प्रस्तुत करते हुए कहती है, जो कुछ मेरा है मेरे आत्मप्राण पति का भी है। वह कहती है – " अब मैं जीवन को असली रूप में अंकित कर सकूँगी .... पर केवल तुम्हारे सहारे.......तुम मुझ जैसी अंधी के सहारे प्यार कर सके तो क्या मैं तुम्हारा एक अपराध भी क्षमा नहीं कर सकती। " [९] अतः वह एक आदर्श नारी है और जीवन मूल्यों को महत्व देना जानती है। नाटक के अंत में सब कुछ जानने के बाद भी वह अपने पति शिवराज को क्षमा कर देती है। उसका यह रूप हमें सोचने पर मजबूर कर देता की नारी इतना धैर्य कहाँ से लाती है और उसका ह्रदय इतना विशाल कैसे हो सकता है? समग्र रूप से यह नाटक समकालीन यथार्थ को उद्‌घाटित करता है, जिसमें पति–पत्नी के सम्बन्धों के माध्यम से व्यक्ति और समाज के वास्तविक रूप को नाटककार ने प्रस्तुत किया है।

संदर्भ सुची

1. बिन बाती के दीप–डा० शंकर शेष (पृ०–13)
2. वही– (पृ०70–71)
3. हिन्दी नाटक आज तक–डा० वीणा मालिक (पृ०–247)
4. डॉ०नीलिमा शर्मा–साठोत्तर हिन्दी नाटक (पृ०161)
5. वही, (पृ० 34)
6. वही, (पृ० 39)
7. वही, (पृ० 44)
8. वही, (पृ० 75)
9. वही,(पृष्ठ 164)